DOI: 10.51220/hjssh.v9i1.10

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 9 pp.65 - 67, December, 2014, ISSN. 0975 - 9891

शिक्षा और मुक्त विश्वविद्यालयः वर्तमान स्वरूप एवं सीमाएं

एस0 डी0 तिवारी

हिन्दी विभाग

हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी गढ़वाल-246001, उत्तराखण्ड

Received: 18-07-2013 **Revised: 10-10-2013** **Accepted: 20-11-2013**

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन शिक्षा से लेकर वर्तमान तक की शिक्षा व्यवस्था तथा उसके स्वरूप का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

KEY WORDS-शिक्षा, मुक्त विश्वविद्यालय, वर्तमान स्वरूप, सीमायें

शिक्षा, ज्ञान-प्राप्ति की एक व्यस्थित जीवन-कला है। इससे जीवन जीने के लिए उचित-अनुचित का विवेक प्राप्त होता है। जीवन की चुनौतियों को दूर करने में शिक्षा एक सशक्त माध्यम है। 'शिक्ष्यते अनया इति शिक्षा' अर्थात् जिससे सीखा जाय, वह शिक्षा है। शिक्षा केन्द्र में 'विद्या' शब्द भी व्यहृत होता है। 'वेत्ति अनया सा विद्या' जिससे जाना जाये, वह विद्या है।

वैदिक युग से लेकर बौद्ध युग, मुस्लिम युग, ब्रिटिश युग, आधुनिक काल एवं स्वातन्त्र्योत्तर युग में शिक्षा-क्षेत्र में उनके प्रयोग हुए हैं। क्या पढ़ाया जाये और कैसे पढ़ाया जाये अर्थात Constent क्या हो और उसकी Methodology क्या हो, जो जीवनोपयोगी हो। जीवनपयागी से तात्पर्य-मानव का सम्पूर्ण विकास-नैतिक, सांस्कृतिक, भौतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक। विकास के लिए एक दृष्टि (Vision) होनी चाहिए। यह दृष्टि सुचिन्तित, सुव्यवस्थित होनी चाहिए।

वैदिक युग में शिक्षा आध्यात्मिक वातावरण में, चरित्र-निर्माण से संयुक्त थी। आत्म ज्ञान और ब्रह्म ज्ञान पर बल दिया जाता था। गुरूकुल की शिक्षा-प्रणाली थी। उनके प्रवेश के नियम होते थे। अर्थात् किस वर्ष में छात्र प्रवेश लेगा। उनकी शिक्षा अवधि होती थी-25 वर्ष तक। उनके पाठ्यक्रम होते थे, उनकी भाषा होती थी। अनेक प्रकार के विषय अध्ययन की व्यवस्था होती थी, उनकी अपनी परीक्षा प्रणाली होती थी, जो मौखिक होती थी और शास्त्रार्थ में विजयी व्यक्ति ही उपाधिधारी होता था। अन्तिम रूप से वह गुरूकुल के व्यवहारिक अनुभवों से 'दीक्षित' होकर, जीवन के दायित्वों का निर्वहन करता था। वर्तमान में भी कमोवेश यह शिक्षा प्रणाली परिवर्तित होकर लागू है। हाँ, विद्यालयीय प्रणाली, वादन व्यवस्था, शुल्क, छात्रावास आदि आजकल के युग की व्यवस्था के अनुरूप है।

ब्राह्मण युग में शिक्षा का रूप वेदकालीन शिक्षा का परिष्कृत रूप था। आश्रम-व्यवस्था थी। वर्णाश्रम

©SHARAD

व्यवस्था के अनुरूप पाठ्यक्रम और शिक्षा का प्रचलन था। 'न स्त्री शूद्रौ धीयताम्' के कारण दोनों की शिक्षा की उपेक्षा हुई। वैदिक काल में ऐसा नहीं था। इससे समाज का शैक्षिक ढांचा कमजोर बना। आगे चलकर आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में, विशेषकर आजादी के बाद संवैधानिक ढांचे के अनुरूप सभी वर्गों-वर्णों और स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया।

बौद्ध युग में शिक्षा, वैदिक विद्यापीठों के स्थान पर बौद्ध बिहारों, मठों और संघों मे दी जाती थी। इस युग में शिक्षा के दो स्तर थे-प्राथमिक और उच्च तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय शिक्षा के प्रसिद्ध एवं बहुचर्चित केन्द्र थे। बड़ी व्यवस्थित शिक्षा प्रणाली थी। कुलपति होते थे। विद्या समितियां होती थीं, उनकी भाषा 'पाली' थी। आजकल की शिक्षा संस्थायें इस प्रणाली से प्रभावित हैं।

मुस्लिम युग में शिक्षा के केन्द्रों-मदरसे, मस्जिदें और मकतबे के द्वारा शिक्षा के उचित प्रबन्ध किये गये। अरबी-फारसी और उर्दू भाषा का प्रयोग राज-काज में होता था। आगरा, दिल्ली, अजमेर, बीजापुर तथा देश के अन्य भाग इसके केन्द्र थे।

ब्रिटिश एवं आधुनिक युग में इसाई पादरियों के द्वारा शिक्षा का प्रयास प्रारम्भ किया गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रभाव, मैकाले के विचार, आकलैण्ड की शिक्षा-नीति, वुड का घोषणा पत्र, हण्टर कमीशन तथा अन्य शैक्षिक प्रयोगों से प्राथमिक, मिडिल, हाईस्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयीय शिक्षा का प्रचार-प्रसार एवं स्थापना के कार्य हुए, अंग्रेजी भाषा की प्रमुखता रही। स्वतन्त्रता आन्दोलन के काल खण्ड में भारतीय चिन्तकों ने भी भारतीय जन मानस के अनुरूप शिक्षा प्राप्ति के लिए सतत आन्दोलनरत एवं प्रयासरत रहे। स्वामी दयानन्द सरस्वती, टैगोर, गांधी जी आदि के शैक्षिक विचार भारतीय-समाज एवं संस्कृति तथा दर्शन से आप्लावित रहे।

स्वतन्त्र भारत में संविधान के अनुरूप शिक्षा को राज्य का विषय बना दिया गया। केन्द्र, राज्य, स्थानीय निकाय अपने-अपने ढंग से शिक्षा के द्वारा सामाजिक, आर्थिक उन्नयन के प्रयास प्रारम्भ किये। मुदालियर कमीशन, कोठारी आयोग, आचार्य नरेन्द्र देव समिति तथा अन्य आयोगों की संस्तुतियों तथा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार पर जीवनोपयोगी शिक्षा पर बल दिया गया। शिक्षा के उपर्युक्त विकास क्रम में युग की मांग और समाज की उपयोगिता को ध्यान में रखा गया।

भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा सर्वजन सुलभ हो, इसके लिए सर्वव्यापी प्रयास जारी है। प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक औपचारिक शिक्षा का प्रबन्धन हो रहा है, परन्तु जनसंख्या विस्फोट के कारण सभी लोग 'औपचारिक' शिक्षा नहीं ले पाते अथवा बीच में ही उनकी शिक्षा में व्यवधान आ जाता है। इसके लिए अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी। प्रौढ़ शिक्षा, चौपाली शिक्षा, पत्राचार पाठ्यक्रम, सांयकालीन कक्षायें, दूरस्थ शिक्षा, चरवाहा विद्यालय, घर पर अध्ययन, प्राइवेट अध्ययन, मुक्त अध्ययन, आंगनबाड़ी, सर्व शिक्षा अभियान आदि शिक्षा के प्रयास किये जा रहे हैं। इन सभी संस्थाओं मे शिक्षा प्रदान करने के अपने-अपने तरीके और पाठ्यक्रम हैं। सभी शिक्षित हों, सभी साक्षर हों, यही अनौपचारिक शिक्षा-औपचारिक शिक्षा का लक्ष्य है।

'मुक्त विश्वविद्यालय' इसी श्रृंखला की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मुक्त विश्वविद्यालय ने युगानुरूप शिक्षा प्राप्ति के तरीकों में परिवर्तन कर 'वंचित' वर्ग के लिए आयु, समय, पूर्व डिग्री आदि बन्धनों को ढीला

कर दिया है, ताकि सभी शिक्षा का अवसर प्राप्त कर सकें और समाज में अपना योगदान दे सकें।

शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि, से मुक्त विश्वविद्यालय की भूमिका लगभग तीन दशकों से प्रभावी हुई है। मुक्त विश्वविद्यालय की अवधारणा भी आयोजित है। ब्रिटेन में प्रचलित मुक्त विश्वविद्यालय के आधार पर भारत में भी व्यापक शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए मुक्त विश्वविद्यालय की अवधारणा साकार हुई। चीन, जापान, थाईलैण्ड, कोरिया, स्पेन, नीदरलैण्ड, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि में भी 'मुक्त विश्वविद्यालय' कार्यरत हैं। 'इग्नू' और मुक्त विश्वविद्यालय पूरे देश में शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। शिक्षा क्षेत्र में (विशेषरूप से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में) औपचारिक शिक्षा के बन्धनों से मुक्ति देने में तीन कदम अत्यन्त उपादेय रहे हैं। प्राइवेट परीक्षार्थी के रूप में अध्ययन करने, पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षित होने तथा मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा 'वंचित जनों' को दूरस्थ क्षेत्रों में जाकर ज्ञान-प्रदान करने की दृष्टि से अनौपचारिक शिक्षा के ये प्रयोग सफल रहे हैं।

मुक्त विश्वविद्यालय की शिक्षा 'नई शिक्षा नीति' के अनुरूप है। ध्यान रखने की बात यह है कि परम्परागत विश्वविद्यालयों की भांति इसमें भी पाठ्यक्रम, पढ़ाई और परीक्षा तीनों होते हैं। इसमें भी 'मूल्यांकन पद्धति और क्रेडिट सिस्टम लागू है। इसमें भी अनेक विद्या शाखायें हैं, इसमें भी पीएच डी0 उपाधि दी जाती है। इसका महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य यह है कि इसमें शिक्षक की सीधे-सीधे आवश्यकता नहीं है, बल्कि सम्पादित पुस्तकों, श्रव्य दृश्य सामग्री, सम्पर्क कार्यक्रम के माध्यम से छात्र पाठ्यक्रम की तैयारी करता है। आवश्यकतानुसार छात्र, परामर्शदाताओं से सामूहिक या व्यक्तिगत तौर पर मार्गदर्शन ले सकता है। प्राइवेट परीक्षा की अपेक्षा, विश्वविद्यालय की परीक्षा की महत्ता इस बात में भी निहित है कि प्राइवेट विद्यार्थी के लिए केवल पुस्तकें ही सहायक होती है, जबकि मुक्त विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए मध्यस्थ के रूप में एक मार्गदर्शक परामर्शदाता भी होता है, जो उनकी कमियों को बताकर उनको उत्कर्ष तक ले जाने में सहायक होता है।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इन पाठ्यक्रमों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा को वही दर्जा प्रदान किया जाना चाहिए, जो कि पूर्ण कालिक शिक्षा के लिए है। रोजगार का वही अवसर हो, जो अन्यों को है। परिस्थितियां सतत् बदल रही हैं, नवीन समस्यायें चुनौती बनकर खड़ी हो रही हैं।

अत: मुक्त विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिए नये पाठ्यक्रम और उनके अध्ययन के और नये तरीके उदय करने होंगे। परन्तु इसके लिए नई दिशा एवं नई दृष्टि स्पष्ट हो। यह दृष्टि कभी-कभी पाठ्यक्रम निर्माण में साधक होती है और कभी-कभी बाधक भी। मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम बढ़ती शिक्षा की मांग के अनुरूप है।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि वर्तमान में मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा की उपादेयता असन्दिग्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 सत्य प्रकाश पचौली, शिक्षा के आयाम, अंसारी रोड़, नई दिल्ली-2
2. डॉ0 रामशकल पाण्डेय, उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-02
3. डॉ0 सुरेश भटनागर, आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, आर0एल0 बुक डिपो, मेरठ-01